भारत में तम्बाकू नियंत्रण

समस्याएं और समाधान

डॉ.नरेश पुरोहित

21वीं शताब्दी में तम्बाकू नियंत्रण पूरे विश्व के लिए एक जटिल चुनौती बन सामने खड़ा है। दुनिया में सबसे ज़्यादा तम्बाकू उत्पादित करने वाले देशों में तीसरे स्थान पर खड़े भारत को इस विकराल दानव की चपेट से बाहर आने के लिए निश्चय ही बहुत संघर्ष करने पड़ेंगे। सरकार के अथक प्रयासों जैसे तम्बाकू के खतरों के प्रति लोगों को आगाह करना, अनेकानेक न्यायिक प्रतिबंधों आदि का प्रभाव दिखना अभी बाकी है। तम्बाकू रहित समाज की नींव हमारी और आपकी स्वतंत्र पहल से ही सम्भव है। प्रस्तुत है भारत में तम्बाकू नियंत्रण में आने वाली कठिनाइयां एवं उनके समाधानों का विश्लेषण...

तम्बाकू उतनी ही प्राचीन प्रतीत होती है जितनी कि मानव सभ्यता। इसकी खेती शायद 7000 सालों से की जा रही है। मेक्सिको व पेरू में पुरातात्विक खोजों में लगभग 3500 ई.पूर्व के आवासीय स्थानों में तम्बाकू के अवशेष पाए गए हैं।

15वीं शताब्दी के अंत तक तम्बाकू का इस्तेमाल किए जाने के दस्तावेजी सबूत उपलब्ध हैं। 1499 में पाया गया था कि वेनेज़ुएला के मार्गरीटा द्वीप के इंडियन्स एक हरी बूटी को चबाया करते थे जिसे वे अपनी गर्दन के इर्द-गिर्द टंगी एक तुम्बी में रखते थे। माना जाता था कि तम्बाकू नामक इस हरी बूटी को चबाने से प्यास बुझती है। सन् 1500 के उत्तरार्द्ध तक दक्षिणी अमरीका में भी तम्बाकू चबाना प्रचलित हो चला था। वेरागुआ (वर्तमान कोस्टारिका) के पुरुष भी सूखे पत्ते चबाते देखे गए थे। सन् 1500 तक तम्बाकू पीना भी आम हो चला था। कोलंबस ने अमरीकी इंडियन्स को मक्के या ताड़ के सूखे पत्तों में मुड़े हुए तम्बाकू के पत्तों को लपेटकर धूम्रपान करते पाया था।

तम्बाकू पाउडर की नसवार के सेवन की प्रथा काफी बाद में आई। तम्बाकू की पत्ती को रोज़वुड की खरड़ में पीसकर नसवार बनाई जाती थी। ब्राज़ील के इंडियन लोग शायद नसवार का सेवन करने वाले सबसे पहले लोग थे। हेटी में तम्बाकू की नसवार का इस्तेमाल नासिका मार्ग को साफ करने व दर्दनाशक दवा के रूप में किया जाता था।

सन् 1519 तक मैक्सिको के इंडियन्स जले व कटे पर दवा के रूप में तम्बाकू पाउडर लगाते थे। साथ ही पिसे हुए

तम्बाकू को Y आकार की पाइप में रखकर वे इसके कश का मज़ा लेते रहते। इस पाइप को टोबागो या टोबाका कहा जाता।

भारत में तम्बाकू उत्पादन व उपयोग

आज तम्बाकू की खेती व विभिन्न तरीकों से इसका सेवन पूरे विश्व में किया जाता है। तम्बाकू उत्पादकों में चीन और अमरीका के बाद भारत का नम्बर आता है। भारत में साढ़े चार लाख हेक्टेयर में तम्बाकू की खेती से 45-50 करोड़ किलोग्राम तम्बाकू उत्पादन होता है। सन् 1987 के विश्व तम्बाकू उत्पादन का यह 7.6% हिस्सा है।

1960-61 में जहां तम्बाकू की पैदावार 750 किलो प्रति हेक्टेयर थी वहीं 1987-88 में यह बढ़कर 1199 किलो प्रति हेक्टेयर तक जा पहुंची (तालिका 1)।

भारत में कई तरह से तम्बाकू का सेवन किया जाता है। राष्ट्रीय स्तर पर तम्बाकू उपयोग के आंकड़े तो उपलब्ध